UNIT - 1	● 1 भवानी प्रसाद मिश्र– परिचय पाठ – सतपुडा के जंगल ● 2 उशा प्रियंवदा – परिचय पाठ – वापसी ● 3 विवेकानन्द पाठ – शिकांगो व्याख्यान
UNIT - 2	● 1 विद्यानिवास मिश्र – परिचय पाठ – ऑगन के पंछी ● 2 महात्मा गांधी पाठ – आत्मकथा के अंश ● 3 विश्व के प्रमुख धर्म
UNIT - 3	● 1 वाक्य रचना व अशुद्धि संशोधन ● 2 अनुवाद – अर्थ व प्रकार ● 3 बीज शब्द – लोकतंत्र , समरसता, कला, साहित्य, अध्यात्म

Renaissance

UNIT 1

भवानीप्रसाद मिश्र की लोकप्रिय रचना: सतपुड़ा के जंगल

सतपुड़ा के घने जंगल।
नींद में डूबे हुए से
ऊंघते अनमने जंगल।
झाड ऊंचे और नीचे,
चुप खड़े हैं आंख मीचे,
घास चुप है, कास चुप है
मूक शाल, पलाश चुप है।
बन सके तो धंसो इनमें,
धंस न पाती हवा जिनमें,
सतपुड़ा के घने जंगल
ऊंघते अनमने जंगल।

सड़े पत्ते, गले पत्ते,
हरे पत्ते, जले पत्ते,
वन्य पथ को ढंक रहे-से
पंक-दल में पले पत्ते।
चलो इन पर चल सको तो,
दलो इनको दल सको तो,
ये घिनौने, घने जंगल
नींद में डूबे हुए से
ऊंघते अनमने जंगल।
अटपटी-उलझी लताएं,
डालियों को खींच खाएं,
पैर को पकड़ें अचानक,
प्राण को कस लें कपाएं।
सांप सी काली लताएं
बला की पाली लताएं
लताओं के बने जंगल
नींद में डूबे हुए से
ऊंघते अनमने जंगल।

Renaissance

मकड़ियों के जाल मुंह पर,
और सर के बाल मुंह पर
मच्छरों के दंश वाले,
दाग काले-लाल मुंह पर,
वात-झन्झा वहन करते,
चलो इतना सहन करते,
कष्ट से ये सने जंगल,
नींद में डूबे हुए से
ऊंघते अनमने जंगल।

अजगरों से भरे जंगल।
अगम, गति से परे जंगल
सात-सात पहाड़ वाले,
बड़े-छोटे झाड़ वाले,
शेर वाले बाघ वाले,
गरज और दहाड़ वाले,
कम्प से कनकने जंगल,
नींद में डूबे हुए से
ऊंघते अनमने जंगल।

इन वनों के खूब भीतर,
चार मुर्गे, चार तीतर
पालकर निश्चिंत बैठे,
विजनवन के बीच बैठे,
झोंपड़ी पर फूंस डाले
गोंड तगड़े और काले।
जब कि होली पास आती,
सरसराती घास गाती,
और महुए से लपकती,
मत्त करती बास आती,
गूंज उठते ढोल इनके,
गीत इनके, बोल इनके
सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए से
ऊंघते अनमने जंगल।

Renaissance

जागते अंगड़ाइयों में,
खोह-खड्डों खाइयों में,
घास पागल, कास पागल,
शाल और पलाश पागल,
लता पागल, वात पागल,
डाल पागल, पात पागल
मत्त मुर्गे और तीतर,
इन वनों के खूब भीतर।
क्षितिज तक फैला हुआ सा,
मृत्यु तक मैला हुआ सा,
क्षुब्ध, काली लहर वाला
मथित, उत्थित जहर वाला,
मेरु वाला, शेष वाला
शम्भू और सुरेश वाला
एक सागर जानते हो,
उसे कैसा मानते हो?
ठीक वैसे घने जंगल,
नींद में डूबे हुए से
ऊंघते अनमने जंगल।

धंसो इनमें डर नहीं है,
मौत का यह घर नहीं है,
उतरकर बहते अनेकों,
कल-कथा कहते अनेकों,
नदी, निर्झर और नाले,
इन वनों ने गोद पाले।
लाख पंछी सौ हिरन-दल,
चांद के कितने किरन दल,
झूमते बन-फूल, फलियां,
खिल रहीं अज्ञात कलियां,
हरित दूर्वा, रक्त किसलय,
पूत, पावन, पूर्ण रसमय
सतपुड़ा के घने जंगल,
लताओं के बने जंगल।

Renaissance

(जन्म: 29 मार्च 1913 – मृत्यु 20 फ़रवरी 1985)

भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में **29** मार्च **1913** को हुआ था।

- **पिता का नाम:** पं० सीताराम मिश्र था।
- वे शिक्षा विभाग में अधिकारी और साहित्य प्रेमी थे।
- भवानीप्रसाद की प्रारम्भिक शिक्षा: नरसिंहपुर और जबलपुर में हुआ।
- हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा पर उनकी अच्छी पकड़ थी।
- भवानीप्रसाद मिश्र **1946** से **1950** तक महिलाश्रम, वर्धा में शिक्षक के पद पर रहे।
- **1952** से **1955** तक वे हैदराबाद में कल्पना' मासिक पत्रिका का संपादन किया।
- **1956** से **1958** तक उन्होंने आकाशवाणी में संचालन का कार्य किया।
- वे गांधी प्रतिष्ठान', गांधी स्मारक निधि' और सर्व सेवा संघ' से जुड़े रहे।
- हाई स्कूल पास करने से पहले भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ हिन्दू पंच' नामक पत्रिका में प्रकाशित हो चूकी थी।
- **1940** में वे दूसरे तार सप्तक' के हिन्दी कवियों के साथ जुड़ गए।
- गांधी विचारधारा के इस कवि की आपातकाल में लिखी गई कविताएँ त्रिकाल संध्या' के नाम से प्रकाशित हुई।
- इनका प्रथम संग्रह गीत.फरोश नई शैली, नई उद्भावनाओं और नये पाठ प्रवाह के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुई।
- उन्हें कविता का गांधी' भी कहा गया है।

रचनाएँ: कविता संग्रह:

गीत.फरोश **(1956),** चकित है दुःख **(1968),** अँधेरी कविताएँ **(1968),** गान्धी पंचशती **(1969),** बुनी हुई रस्सी **(1971),** खुशबू के शिलालेख **(1973),** व्यक्तिगत **(1974)** परिवर्तन जिए **(1976),** अनाम तुम आते हो **(1976),** इदम् न मम् **(1977),** त्रिकाल सन्ध्या **(1978),** कालजयी ;खंडकाव्य) **(1978),** शरीर कविता: फासले और फूल **(1980),** मानसरोवर दिन **(1981),** सम्प्रति **(1982),** नीली रेखा तक **(1984)** और सन्नाटा।

बाल कविताएँ: तुकों के खेल

संस्मरण: जिन्होंने मुझे रचा

निबंध संग्रह: कुछ नीति कुछ राजनीति

1972 में उन्हें बुनी हुई रस्सी' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

उन्होंने ताल ठोककर कवियों को नसीहत दिया था. "जिस तरह हम बोलते हैंए उस तरह तू लिख और इसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख।

गीत.फ़रोश (कविता) यह कविता गीत के रूप में लिखा गया है। इसमें एक नया प्रवाह और नया भाव.बोध है। यह कविता कवि कर्म के प्रति समाज और स्वयं कवि के बदलते हुए दृष्टिकोण को उजागर करती है। व्यंग्य के साथ.साथ इसमें वस्तु स्थिति का मार्मिक निरूपण भी है। गीत.फ़रोश कविता में कवि ने अपनी फ़िल्मी दुनिया में बिताये गए समय को याद करके गीतों का विक्रेता बन जाने की बिडम्बना को मार्मिकता के साथ कविता में नया रूप में ढाला है।

कवि ने अपने कविता की पृष्ठ भूमि के विषय में स्वयं कहा है. "यह गीत.फ़रोश शीर्षक कविता हँसाने वाली मैने बहुत तकलीफ से लिखी थी। मैं पैसे को महत्व नहीं देता लेकिन पैसा बीच.बीच में अपना महत्व स्वयं प्रतिष्ठित करा लेता है। मुझे अपनी बहन की शादी करनी थी। पैसा मेरे पास नहीं था। तब मैंने कलकते में बन रही फिल्म के लिए गीत लिखे। गीत अच्छे लिखे गए लेकिन मुझे दुःख इस बात का था कि मैंने पैसे लेकर गीत लिखे।

गीत लिखने के बाद पैसा मिले यह बात अलग है लेकिन मुझे कोई कहे कि इतने पैसे दूंगा तुम गीत लिख दो, यह स्थिति मुझे नापसंद था। मैं समझता हूँ कि आदमी के जो साधना का विषय है वह उसकी जीविका का विषय नहीं होना चाहिए फिर कविता तो अपनी इच्छा से लिखी जाने वाली चीज है। इस तकलीफदेह पृष्ठभूमि में लिखी गई 'गीत-फ़रोश' है।" दूसरे सप्तक की भूमिका में उन्होंने लिखा है, "मैंने अपनी कविता में प्रायः वही लिखा है जो मेरी ठीक पकड़ में आ गया है। दूर से कौड़ी लाने की महत्वाकांक्षा भी मैंने कभी नहीं की।"

'गीत-फ़रोश' कविता कवि की उस टीस को प्रकट करती है जहाँ कवियों ने अपनी काव्यात्मकता को फिल्म जगत के पूंजीवादी समाज को बेचा और जिनकी तीखी आलोचना हुई थी। भवानीप्रसाद मिश्र ने गीत-फ़रोश कविता में यही बताया है कि हम तो गीत बेच रहे हैं, लोगों ने तो अपना ईमान तक बेच दिया है। यह कविता वर्तमान समय में एक कवि एक साहित्यकार की पीड़ा को दर्शाती है। वह अपनी रचना, साधारण वस्तुओं की भांति बाजार में बेचने को विवश है। इस कविता में कवि के व्यक्तिगत पीड़ा की अभिव्यक्ति है

CHAPTER - 2

वापसी: उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा हिंदी साहित्य में नई कहानी आंदोलन की प्रमुख लेखिका मानी जाती हैं। वह नई कहानी आंदोलन के दौर की चर्चित महिला कहानीकारों में से एक थीं। उन्होंने अपने जीवन की अर्जित अनुभूतियाँ, स्मृतियाँ और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति को अपनी रचनाओं का विषय बनाया जिससे पाठक वर्ग जुड़ा हुआ महसूस करता हैं। इसके साथ ही आधुनिक हिंदी साहित्य में उषा प्रियंवदा जी ने कथा साहित्य और उपन्यास विधा में अपना विशेष योगदान दिया था। उषा प्रियंवदा जी को हिंदी साहित्य में अपनी अनुपम रचनाओं के लिए कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका हैं।

उषा प्रियंवदा का प्रारंभिक जीवन

उषा प्रियंवदा जी का जन्म 24 दिसंबर 1930 को कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वहीं इनकी आरंभिक शिक्षा उनके गृह क्षेत्र में ही पूरी हुई थी। उषा जी का बचपन से ही साहित्य के प्रति विशेष लगाव था इसलिए उन्होंने अपने स्कूल के दिनों से ही **'मुंशी प्रेमचंद'**, **'शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय'**, **'उपेन्द्रनाथ अश्क'** व अपने गुरु **'प्रकाशचंद्र गुप्त'** के साथ-साथ अन्य साहित्यकारों की रचनाओं को पढ़ना शुरू कर दिया था। वहीं अपने कॉलेज के दिनों से ही उषा जी ने कहानियां लिखनी शुरू कर दी थी। उनकी पहली कहानी का नाम '**लालचूनर**' था जो '**सरिता**' पत्रिका में छपी थी।

अमेरिका से प्राप्त की पोस्ट-डॉक्टल की उपाधि

इसके बाद वह आ गयी और यहाँ उन्होंने '**इलाहाबाद विश्वविद्यालय**' से एम.ए की डिग्री प्राप्त की। फिर उषा जी ने कुछ समय तक यहीं रहते हुए अंग्रेजी विभाग में अध्यापन कार्य किया और साथ साथ अपनी अंग्रेजी विषय में पीएचडी कंप्लीट की। उन्होंने कुछ वर्षों तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय के **'मिरांडा कॉलेज'** और **'लेडी श्रीराम कॉलेज'** में अध्यापन कार्य किया जिसके बाद वह '**फुलब्राइट स्कालरशिप**' पर पोस्ट-डॉक्टल करने अमेरिका के ब्लूमिंगटन, इंडियाना गई

भाषाविद किम. विल्सन से हुआ विवाह

अपने अध्ययन दौरान उषा प्रियंवदा जी (Usha Priyamvada) की मुलाकात विश्वविद्यालय के भाषाविद '**डॉ. किम. विल्सन**' से हुई, जिसके कुछ समय बाद दोनों ने विवाह कर लिया। इसके बाद उषा जी ने दो वर्षों तक पोस्ट-डॉक्टल की स्टडी की और '**विस्कांसिन विश्वविद्यालय**' में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर अध्यापन कार्य किया और यहीं से सेवानिवृत हुई। वर्तमान समय में वह लेखन कार्य और देश विदेश का भ्रमण कर रही हैं।

उषा प्रियंवदा की साहित्यिक रचनाएं

उषा प्रियंवदा जी ने अपनी रचनाओं में मुख्य रूप से स्त्री विषयक और मध्यवर्गीय जीवन पर केंद्रित विषय पर साहित्य का सृजन किया है। उन्होंने अमेरिका में लिखी अपनी पहली कहानी **'बनवास'** में संकुचित दायरे में रहने

वाली भारतीय नारी की समस्याओं के बारे में बताया है। उषा प्रियंवदा ने हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में रचनाएँ की हैं। आइए अब हम उषा प्रियंवदा जी की प्रमुख साहित्यिक कृतियों के बारे में जानते हैं:-

कहानी संग्रह

- जिंदगी और गुलाब के फूल – 1961
- एक कोई दूसरा – 1966
- कितना बड़ा झूठ – 1972
- मेरी प्रिय कहानियां
- मीराबाई – अंग्रेज़ी में लिखित
- सूरदास – अंग्रेज़ी में लिखित

उपन्यास

- पचपन खंभे लाल दीवारें – 1961
- रुकोगी नहीं राधिका – 1967
- शेष यात्रा – 1984
- अंतर्वंशी – 2000
- भया कबीर उदास – 2007
- नदी – 2013

सम्मान और पुरस्कार

उषा प्रियंवदा जी (Usha Priyamvada) को आधुनिक हिंदी साहित्य में कहानी और उपन्यास विधा में विशेष योगदान देने के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका हैं। अब हम उन्हें मिले कुछ प्रमुख पुरस्कारों के बारे में जानते हैं:-

- पद्मभूषण
- डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्क

वापसी पाठ का सारांश

वर्तमान जीवन की विसंगतियों और विशृंखलाओं का चित्रण करने में सिद्धहस्त लेखिका 'उषा प्रियंवदा' ने प्रस्तुत कहानी 'वापसी' में एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार के बिखराव का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। 'वापसी' लेखिका की सुप्रसिद्ध रचना है।

renaissance

कहानी का मुख्य पात्र गजाधर बाबू रेलवे में नौकरी करता है। वह अपने परिवार से दूर रेलवे क्वार्टर में अकेले रहता है। बच्चों की उच्च शिक्षा के कारण परिवार शहर में रहता है,जहाँ उनका अपना मकान है। वह जीवन के पैंतीस वर्ष अकेले ही इस आशा में व्यतीत कर देते हैं कि सेवानिवृत्त होने पर उन्हें परिवार की संगति मिलेगी। इसके उलट, वह परिवार के मध्य स्वयं को उपेक्षित एवं अपमानित अनुभव करते हैं। परिवार में कोई उनका कहना नहीं मानता। बड़ा बेटा पिताजी के बीच में बोलने पर ताने देता है, तो बेटी बसन्ती टोकने पर रूठ जाती है। बहू घर का काम करना ही नहीं चाहती है।

पत्नी घर की शिकायतें तो करती है पर उन शिकायतों में आत्मीयता नहीं होती और न ही निवारण हेतु सलाह ही ली जाती है। बड़ा बेटा अमर अपनी पत्नी के साथ अलग गृहस्थी बसाना चाहता है। उनके आने से पूर्व सम्पूर्ण परिवार पर अमर की ही आज्ञा चलती थी। बैठक में पिता का बैठना उसे पसन्द नहीं है। इस स्थिति में गजाधरबाबू को अपना जीवन एक खोई निधि-सा प्रतीत होता है। वह अपने ही घर में स्वयं को एक परदेशी के समान महसूस करने लगतेइन्हीं परिस्थितियों के मध्य गजाधर बाबू को सेठ रामजीमल की चीनी की मिल में कार्य करने का प्रस्ताव मिलता है जिसे वह बिना सोचे-समझे स्वीकार कर जाने को तैयार हो जाते हैं। परिवार भी उनके जाने की तैयारी में लग जाता है और उन्हें विदा करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

वापसी कहानी की समीक्षा – उषा प्रियवंदा

उषा प्रियवंदा ने अपनी कहानियों में **पारिवारिक जीवन की परिवर्तित व्यवस्था एवं प्रेम_सम्बन्धों के बदलते स्वरूप** को अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनकी कहानियों में आधुनिक परिवारों में बदलते मानवीय सम्बन्धों की व्याख्या बहुत सुन्दर और स्वाभाविक ढंग से की गयी है। 'वापसी' उनकी चर्चित कहानियों में से एक है। यह कहानी **संयुक्त परिवार के विघटन** की कहानी है। इसमें एक व्यक्ति के रिटायर होकर घर लौटने और पुनः घर छोङकर अन्यत्र लौटने की कहानी की बहुत मार्मिकता से अभिव्यक्त किया गया है।

वापसी कहानी का कथानक-

'वापसी' एक रिटायर्ड रेल्वे कर्मचारी की कहानी है। **गजाधर बाबू** पैंतीस वर्ष की नौकरी के पश्चात् अत्यन्त उत्साह के साथ घर लौटते है। उन्हें अपने परिवार से बहुत स्नेह था। स्त्री और बच्चों को उन्होंने बच्चों की पढ़ाई की सुविधा की दृष्टि से शहर छोङ दिया था तथा स्वयं रेल्वे कर्वाटर में रहते थे। जिस समय रिटायर होते है, तो उन्हें एक परिचित संसार को छोङने का दुख होता है, किन्तु उन्हें अपने परिवार के साथ रह सकने की प्रसन्नता भी होती है। लेकिन अपने घर में आकर इसके विपरीत होता है। उनके अकेलेपन का अहसास और गहरा हो जाता है।

वे अपने घर में अपनी व्यर्थता का अनुभव करते है। जैसे किसी मेहमान के लिए अस्थाई चारपाई का प्रबन्ध कर दिया जाता है वैसे ही उनके लिए बैठक में एक पतली-सी चारपाई डाल दी गयी। वे अपनी पत्नी से भी बातचीत में सहानुभूति का अभाव पाते है और अनुभव करते हैं कि उनकी लङकी, पुत्र, पुत्रवधू को किसी भी बात में उनका

हस्तक्षेप सहन नहीं है। उनकी उपस्थिति पर घर में ऐसी लगने लगी जैसे बेठक में उनकी चारपाई थी। उन्होंने अनुभव किया कि वह अपनी पत्नी और बच्चों के लिए धनोपार्जन का साधन मात्र थे।

अन्त में वह किसी दूसरी नौकरी पर चले जाते है तब भी पत्नी उनके साथ नहीं जाती और उनकी उपस्थिति की प्रतीक चारपाई कमरे से बाहर निकाल दी जाती है। यह सम्पूर्ण कथा बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत की गयी है। रोचकता आद्यन्त बनी रहती है। पाठक को यह घर-घर की हानी प्रतीत होती है। पीढ़ी का संघर्ष कुछ इस रूप में मुखरित हुआ है कि पुरानी पीढ़ी में तो सामंजस्य का अभाव नहीं है, अपितु नयी पीढ़ी में हृदयहीनता एवं पुरानी पीढ़ी के प्रति उदासीनता ही अधिक दिखाई पङती है।

चरित्र-चित्रण- कहानी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरित्र गजाधर बाबू का ही है। प्रारम्भ में ही वह एक सहृदय एवं स्नेही व्यक्ति के रूप में हमारे सामने आते है। घर जाने की खुशी में भी वह एक विषाद का अनुभव करते है जैसे एक परिचित स्नेह, आदरमय, सहज संसार में उनका नाता टूट रहा हो। उनका सेवक गनेशी उनके जाने पर दुखी होता है तो वे कहते है- **"कभी कुछ जरूरत हो तो लिखना गनेशी, इस अगहन तक बिटिया की शादी कर दो।"**

उन्हें अपनी पत्नी और बच्चों से बहुत लगाव था, किन्तु जब वह यह जान लेते है कि वह उनके लिए धनोपार्जन के निमित्त मात्र है तो वह चुपचाप उनके जीवन से दूर नौकरी करने चले जाते है। उनमें सामंजस्य की क्षमता का अभाव नहीं है, किन्तु बच्चों के साथ गृहस्थ में रम गयी है। पति को उसकी सहानुभूति की कितनी आवश्यकता है, इसका उसे जरा सा भी अहसास नहीं होता है। नरेन्द्र आधुनिक युग का वह युवक है जो पिता के साथ रहना पसन्द नहीं करता है।

वह माँ से कहता है- **"अम्मा तुम बाबूजी से कहती क्यों नहीं?** बैठे बिठाये कुछ करते नहीं तो नौकर को ही छुङा दिया। अगर बाबूजी यह समझें कि मैं साइकिल पर गेहूँ रखकर आटा पिसाने जाऊँगा तो मुझसे यह नहीं होगा। बूढ़े आदमी है चुपचाप पङे रहें। हर चीज में दखल क्यों देते है।" बसन्ती भी पिता के टोकने के कारण उनसे बोलती तक नहीं है। उसे और उसकी भाभी को गजाधर बाबू का नौकर छुङाना बहुत बुरा लगता है। गजाधर बाबू के पुनः नौकरी पर चले जाने से सभी बहुत प्रसन्न होते है।

वापसी कहानी की भाषा-शैली-

'वापसी' कहानी की भाषा इसके कथ्य एवं चरित्रों के अनुकूल ही है। कहानी की भाषा दैनिक प्रयोग में आने वाली **सरल भाषा** है। उसमें **समप्रेषणीयता एवं गति** है। कहानी के मूलभाव स्वरूप घर में गजाधर की स्थिति को व्यक्त करने वाली भाषा का एक उदाहरण देखिए- **"किसी भी बात में हस्तक्षेप न करने के निश्चय के बाद भी उनका अस्तित्व उस वातावरण का एक भाग न बन सका। उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगने लगी जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई थी। उनकी सारी खुशी एक उदासीनता में डूब गयी।"**

वापसी कहानी में संवाद प्रयोग-

संवाद कहानी की नाटकीयता एवं सजीवता में वृद्धि करते है। प्रस्तुत कहानी के संवादों की भाषा सरल है। वे सहज, स्वाभाविकता से पूर्ण है तथा कथानक को गति प्रदान करते है। पात्रों की मनस्थिति का परिचय देने में ये संवाद विशेष रूप से सहायक हुए है। एक उदाहरण देखिए-

'नरेन्द्र ने थाली सरकाकर कहा, 'मैं ऐसा खाना नहीं खा सकता।' बसन्ती तुनककर बोली, 'तो न खाओ' कौन तुम्हारी खुशामद करता है?'
'तुमसे खाना बनाने को कहा किसने था?' नरेन्द्र चिल्लाया
'बाबूजी ने।'
'बाबूजी को बैठे-बैठे यही सूझता है।'
वापसी कहानी में वातावरण-

उषा प्रियंवदा ने **'वापसी'** कहानी में विघटित होते हुए संयुक्त परिवार को सफलतापूर्वक उभारा है। संयुक्त परिवार का एक चित्र इन पंक्तियों में मिल जायेगा-''अमर और उसकी बहु की शिकायतें बहुत थी। उनका कहना था कि गजाधर बाबू हमेशा बैठक में ही पडे रहते है। कोई आने जाने वाला हो तो बैठाने की जगह नहीं। अमर को अब भी वह छोटा सा समझते थे और मौके बेमौक टोक देते थे। बहू को काम करना पडता था और सास जब तक फूहडपन पर ताने देती रहती थी।

वापसी कहानी का उद्देश्य-

वापसी कहानी में विघटित होते हुए संयुक्त परिवार की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। पीढ़ी-संघर्ष एवं नवीन पीढ़ी की हृदयहीनता का चित्रण लेखिका ने सफलतापूर्वक किया है। गजाधर बाबू नयी पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी के संघर्ष के संदर्भ में विवशतापूर्ण अकेलापन चुनने के लिए बाध्य है। पुराने संस्कारों के कारण वह नये के साथ सामंजस्य नहीं कर पाये, यह दृष्टिकोण एकांगी होगा, नये के पास वह सहृदय ही नहीं है जो उन्हें सामंजस्य का अवसर भी प्रदान करता। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'वापसी' कहानी कला की कसौटी पर खरी उतरती है।

वापसी कहानी के शीर्षक की सार्थकता-

कहानी का शीर्षक संक्षिप्त, किन्तु प्रभावशाली होना चाहिए। वस्तुतः कहानी का मूल भाव जब संक्षिप्त होते-होते एक शब्द या शब्द समूह में परिवर्तित हो जाये तो वहीं उसका सार्थक शीर्षक होता है। आलोच्य कहानी का शीर्षक कहानी की प्रमुख घटना पर आधारित एवं कथा की मूल संवेदना को अभिव्यक्त करने में सफल है। **गजाधर बाबू** पैंतीस वर्ष पश्चात् रेलवे में नौकरी करके रिटायर होते है।

Renaissance

अपनी नौकरी में अधिकतर उन्हें अपने परिवार से अलग रहना पङता। वह स्नेही व्यक्ति थे। जिस समय रिटायर होते है, तो उन्हें एक परिचित संसार को छोङने का दुख होता है, किन्तु उन्हें अपने परिवार के साथ रह सकने की प्रसन्नता भी बहुत होती है। लेकिन अपने घर में आकर व्यर्थता का अनुभव करते है। जैसे किसी मेहमान के लिए अस्थाई चारपाई का प्रबन्ध कर दिया जाता है वैसे ही उनके लिए बैठक में पतली-सी चारपाई डाल दी गयी। वे अपनी पत्नी से भी बातचीत में सहानुभूति का अभाव पाते है और अनुभव करते है कि उनकी लङकी, पुत्र, पुत्रवधू को किसी भी बात में उनका हस्तक्षेप सहनू नहीं है।

उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी लगने लगी जैसे बैठक में उनकी चारपाई थी। उन्होंने अनुभव किया कि वह अपनी पत्नी और बच्चों के लिए धनोपार्जन का साधन मात्र थे। इन सब बातों से क्षुब्ध होकर वे अन्यत्र नौकरी के लिए प्रार्थनापत्र देते है तथा नियुक्ति पत्र मिल जाने पर वहाँ से चले जाते है। **उनकी घर से वापिस नौकरी पर लौटने की घटना ही इस कहानी का शीर्षक है।** उनके जीवन की सारी कटुता, खिन्नता उनकी इस 'वापसी' में समाहित हो जाती है। इस प्रकार का शीर्षक अत्यन्त सार्थक सिद्ध होता है।

वापसी कहानी का निष्कर्ष-

संक्षेप में कह सकते है कि **'वापसी'** कहानी कहानी-कला की कसौटी पर खरी उतरती है। यह **पारिवारिक विघटन को प्रस्तुत करने वाली** कहानियों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कथावस्तु, चरित्र, वातावरण, उद्देश्य आदि सभी दृष्टियों से यह एक विशिष्ट और प्रभावी कहानी है।

Renaissance

CHAPTER -3

स्वामी विवेकानंद शिकागो

स्वामी विवेकानंद समकालीन भारत के एक प्रसिद्ध लेखक, विद्वान, विचारक, संत और दार्शनिक थे। उनका जन्म 12 जनवरी, 1863 को जॉय सिटी कलकत्ता में हुआ था। उनका मूल नाम नरेंद्रनाथ दत्ता था। उनके पिता विश्वनाथ दत्ता एक विद्वान व्यक्ति थे, जिन्हें अंग्रेजी और फारसी दोनों का गहरा ज्ञान था। वे कलकत्ता के सर्वोच्च न्यायालय में एक सफल वकील थे। उनकी माँ एक धर्मपरायण महिला थीं, जिन्होंने उन्हें बचपन से ही प्रभावित किया था। उन्होंने उनके चरित्र को आकार देने में एक प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने पहले नरेन को अंग्रेजी का पाठ पढ़ाया और उन्हें बंगाली अक्षरों से परिचित कराया।

शिक्षा [Education]

युवा नरेन ने कलकत्ता में मेट्रोपॉलिटन इंस्टीट्यूशन में और परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अध्ययन किया। उन्होंने कलकत्ता के एक अंग्रेजी कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और बी.ए. परीक्षा, और आगे कानून का अध्ययन करने के लिए दौरा किया। लेकिन उनके पिता की मृत्यु के बाद, उनके परिवार की आर्थिक स्थिति ने उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए मुकदमा चलाने की अनुमति नहीं दी।

वे एक बेहतरीन गायक थे। एक दिन रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें एक भक्ति गीत गाते हुए सुना। उसने युवक से उसे काली मंदिर में देखने के लिए कहा। नरेन भगवान को आमने सामने देखने के लिए बहुत उत्सुक थे। उन्होंने कई धार्मिक संतों से उनकी इच्छा के बारे में पूछा, लेकिन कोई भी उन्हें संतुष्ट नहीं कर सका।

अमेरिका के बहनो और भाइयो,

आपके इस स्नेहपूर्ण और जोरदार स्वागत से मेरा हृदय अपार हर्ष से भर गया है। मैं आपको दुनिया की सबसे प्राचीन संत परंपरा की तरफ से धन्यवाद देता हूं। मैं आपको सभी धर्मों की जननी की तरफ से धन्यवाद देता हूं और सभी जाति, संप्रदाय के लाखों, करोड़ों हिंदुओं की तरफ से आपका आभार व्यक्त करता हूं। मेरा धन्यवाद

Renaissance

कुछ उन वक्ताओं को भी जिन्होंने इस मंच से यह कहा कि दुनिया में सहनशीलता का विचार सुदूर पूरब के देशों से फैला है। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूं, जिसने दुनिया को सहनशीलता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। हम सिर्फ सार्वभौमिक सहनशीलता में ही विश्वास नहीं रखते, बल्कि हम विश्व के सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे देश से हूं, जिसने इस धरती के सभी देशों और धर्मों के परेशान और सताए गए लोगों को शरण दी है। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमने अपने हृदय में उन इजरायलियों की पवित्र स्मृतियां संजोकर रखी हैं, जिनके धर्म स्थलों को रोमन हमलावरों ने तोड़-तोड़कर खंडहर बना दिया था और तब उन्होंने दक्षिण भारत में शरण ली थी। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूं, जिसने महान पारसी धर्म के लोगों को शरण दी और अभी भी उन्हें पाल-पोस रहा है।

भाइयो, मैं आपको एक श्लोक की कुछ पंक्तियां सुनाना चाहूंगा जिसे मैंने बचपन से स्मरण किया और दोहराया है और जो रोज करोड़ों लोगों द्वारा हर दिन दोहराया जाता है: जिस तरह अलग-अलग स्त्रोतों से निकली विभिन्न नदियां अंत में समुद में जाकर मिलती हैं, उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा के अनुरूप अलग-अलग मार्ग चुनता है। वे देखने में भले ही सीधे या टेढ़े-मेढ़े लगें, पर सभी भगवान तक ही जाते हैं।

वर्तमान सम्मेलन जो कि आज तक की सबसे पवित्र सभाओं में से है, गीता में बताए गए इस सिद्धांत का प्रमाण है: जो भी मुझ तक आता है, चाहे वह कैसा भी हो, मैं उस तक पहुंचता हूं। लोग चाहे कोई भी रास्ता चुनें, आखिर में मुझ तक ही पहुंचते हैं।

सांप्रदायिकताएं, कट्टरताएं और इसके भयानक वंशज हठधमिर्ता लंबे समय से पृथ्वी को अपने शिकंजों में जकड़े हुए हैं। इन्होंने पृथ्वी को हिंसा से भर दिया है। कितनी बार ही यह धरती खून से लाल हुई है। कितनी ही सभ्यताओं का विनाश हुआ है और न जाने कितने देश नष्ट हुए हैं।

अगर ये भयानक राक्षस नहीं होते तो आज मानव समाज कहीं ज्यादा उन्नत होता, लेकिन अब उनका समय पूरा हो चुका है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आज इस सम्मेलन का शंखनाद सभी हठधर्मिताओं, हर तरह के क्लेश, चाहे वे तलवार से हों या कलम से और सभी मनुष्यों के बीच की दुर्भावनाओं का विनाश करेगा।

UNIT - 2

विद्यानिवास मिश्र जीवन परिचय

- जन्म - **28** जनवरी, **1926**
- जन्म भूमि - गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
- मृत्यु - **14** फ़रवरी, **2005**
- कर्म भूमि - भारत
- कर्म-क्षेत्र – निबन्ध लेखन।
- भाषा – हिन्दी
- विद्यालय - 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय'

प्रसिद्धि – ललित निबन्ध लेखक

विशेष योगदान-

विद्यानिवास हिन्दी की प्रतिष्ठा हेतु सदैव संघर्षरत रहे, मॉरीशस से सूरीनाम तक अनेकों हिन्दी सम्मेलनों में मिश्र जी की उपस्थिति ने हिन्दी के संघर्ष को मजबूती प्रदान की।

विद्यानिवास मिश्र के निबंध

- छितवन की छांह - **1953**
- कदम की फूली डाल - **1956**
- तुम चंदन हम पानी - **1957**
- आंगन का पंछी और बंजारा मन - **1963**
- मैंने सिल पहुंचाई - **1966**
- वसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं - **1972**
- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है - **1974**
- परंपरा बंधन नहीं - **1976**
- कंटीले तारों के आर पार - **1976**
- कौन तू फुलवा बीनन हारी - **1980**
- निज सुख मुकुर - **1981**
- भ्रमरानंद के पत्र - **1981**

Renaissance

- तमाल के झरोखे से - **1981**
- अस्मिता के लिए - **1981**
- संचारिणी - **1982**
- अंगद की नियति - **1984**
- लागौ रंग हरी - **1985**
- गाँव का मन - **1985**
- नैरंतर्य और चुनौती - **1988**
- भाव पुरुष श्रीकृष्ण - **1990**
- महाभारत का काव्यार्थ
- अग्निरथ
- जीवन अलभ्य है जीवन सौभाग्य हैं - **1991**
- देश, धर्म और साहित्य - **1992**
- नदी, नारी और संस्कृति - **1993**
- फागुन दुई रे दुना - **1994**
- बूंद मिले सागर में - **1994**
- पींपल के बहाने - **1994**
- शिरीष की याद आयी - **1995**
- गिर रहा है आज पानी - **2001**
- स्वरूप विमर्श - **2001**
- बाँधी का करुण रस - **2002**

आलोचना:-

- रीति विज्ञान
- हिंदी शब्द संपदा
- साहित्य की चेतना

संस्मरण:-

- चिड़िया रैन बसेरा **अनुवाद**

सम्मान/पुरस्कार:-

- मूर्ति देवी पुरस्कार - **1987**

Renaissance

- पद्म श्री - 1988
- विश्व भारती सम्मान - 1996
- साहित्य अकादमी का महत्तर सदस्यता सम्मान - 1996
- भारत भारती सम्मान - 1997
- पद्मभूषण - 1998
- मंगला प्रसाद पारितोषिक - 2001
- हेडगेवार प्रज्ञा पुरस्कार

विशेष:-

- विद्यानिवास मिश्र ने कुछ वर्ष नवभारत टाइम्स' समाचार पत्र के संपादक का दायित्व भी संभाला।
- पद्म भूषण' विद्यानिवास मिश्र राज्यसभा सांसद के रूप में कार्य करते हुए 14 फ़रवरी, 2005 को एक सड़क दुर्घटना के कारण लगभग अस्सी वर्ष की उम्र में दिवंगत हुए।

Renaissance

UNIT -3

अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा

अनुवाद शब्द अंग्रेजी के शब्द ट्रांसलेशन का पर्यायवाची है। इसका अर्थ है-- '**अनुवाद**'। पार अर्थात् 'अन्यत्र' दूसरी ओर' तथा वहन का अर्थ है 'ले जाना'। इस प्रकार किसी वस्तु को एक स्थान से अन्यत्र या दूसरी ओर ले जाना 'ट्रांसलेशन' कहलाता है। अंग्रेजी शब्दकोष के अनुसार, "एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में व्यक्त करना 'ट्रांसलेशन' कहलाता है।"

अनुवाद वस्तुतः जटिल भाषिक प्रक्रिया का परिणाम या उसकी परिणति है। अनुवाद की प्रक्रिया बहुस्तरीय है। उसका एक स्तर विज्ञान की तरह विश्लेषणात्मक है जो क्रमबद्ध विवेचन की अपेक्षा रखता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी के साथ.साथ वर्तमान में अत्यंत प्रभावशाली माध्यम के रूप में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्वफलक पर तेजी से अविर्भूत होते ज्ञान.विज्ञान तथा प्रौद्योगिक की अनेकविध क्षेत्रों का फैलाव समस्त जगत् मे तीव्र गति से हो रहा है। ज्ञान.विज्ञान के उक्त सभी क्षेत्रों, देश.विदेशों की संस्कृति तथा देश के प्रशासन आदि को यथाशीघ्र समुचित ढंग से अभिव्यक्ति देने मे एक सहायक अनिवार्य तत्व के रूप मे अनुवाद का महत्व स्वयंसिद्ध है।

निष्कर्षतः अनुवाद के प्रमुखतः तीन उद्देश्य है—

1. दूसरी भाषा के साहित्य से अपनी भाषा के साहित्य को समृद्ध करना।
2. दूसरी भाषाओं की शैलियों, मुहावरों, दार्शनिक तथ्यों, वैज्ञानिक एवं तकनीकि ज्ञान की प्राप्ति।
3. विचार-विनिमय।

अनुवाद के प्रकार

अनुवाद मुख्यतः तीन प्रकार के होते है—

1. शब्दानुवाद

शब्दानुवाद में मूल भाषा का दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों अनुवाद किया जाता है। मूल भाषा की शब्द.योजना और वाक्य विन्यास को यथावत् अनुवाद की भाषा में रखा जाता है। यह शब्दसः उनका अनुवाद होता है अर्थात् वाक्य में प्रयुक्त शब्दक्रम के अनुसार ही अनुवाद में क्रम रखा जाता है। इससे कई बार वाक्य का सही अर्थ ध्वनित नही होता और कई बार तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

2. भावानुवाद

शब्दानुवाद की तुलना में भावानुवाद पाठक को अधिक समझ में आता है। इसमें शब्दों के क्रमानुसार अनुवाद का ध्यान न रखते हुये उस वाक्य या वाक्यों के भावगत पर नजर रखी जाती है और अनुवाद का लक्ष्य मूलभाव को उजागर करना होता है, लेकिन अनुवादक इस कार्य में अपने विचारों का समिश्रण नही कर सकता। केवल वह भावानुवाद करता है।

3. पर्याय या रूपांतर अनुवाद

इसमें अनुवादक की पूरी मनमानी रहती है। वह यथेष्ट परिवर्तन करता है। अपनी बातों-विचारों का समावेश करता है, लेकिन मूलपाठ के उद्देश्य अथवा विचार से भटकता नही है बल्कि उसमें नई ऊर्जा और चेतना भर देता है।

एक अच्छे अनुवाद में निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए--

1. अनुवाद में कम से कम दो भाषाओं का होना जरूरी हैं।

2. स्त्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में सावधानी पूर्वक प्रस्तुत करना चाहिए।

3. अच्छे अनुवाद में अभिव्यक्ति सुबोध और प्रवाहमयी होति हैं।

4. अनुवाद मूलतः भावानुवाद होना चाहिए। मात्र शाब्दिक रूपांतरण न हो।

5. अच्छे अनुवाद में मूल रचना की भाषा शैली सुरक्षित रहे।

6. एक भाषा के भाव व विचार का कथ्य दूसरी भाषा में यथावत व्यक्त होना चाहिए।

7. अनुवाद की भाषा स्त्रोत भाषा की प्रकृति के अनुसार हो।

8. अनुवाद की प्रक्रिया में स्त्रोत भाषा की प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य भाषा के अनुरूप बदलना चाहिए अतः स्त्रोत भाषा के समानार्थी प्रतीक लक्ष्य भाषा में खोजना चाहिए।

9. लक्ष्य भाषा के वाक्यों व संरचनात्मक तत्वों को स्त्रोत भाषा की प्रकृति के अनुसार रूपांतरित करना चाहिए।

10. अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि वह जीवंत लगे।

11. भाषा में प्रवाहमयता हो।

12. अनुवाद का वाक्य विन्यास भाषा की प्रकृति के अनुसार हो।

इस प्रकार से एक अच्छा अनुवाद भावों व विचारों को समग्र रूप से व्यक्त करता है।

लोकतंत्र क्या है?

- **'लोकतंत्र (Democracy meaning in hindi)'** शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'डेमोस' (लोग) और 'क्रेटोस' (नियम) से हुई है, जिसका मूल अर्थ 'लोगों का शासन' है।
- **लोकतंत्र (What is democracy in Hindi)** सरकार की एक प्रणाली है जहां नागरिक सीधे सत्ता का प्रयोग करते हैं या एक शासी निकाय बनाने के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं।
- लोकतंत्र **(Democracy meaning in hindi)** एक ऐसी प्रणाली के रूप में सामने आता है जहां सरकार नागरिकों के प्रति जवाबदेह होती है, न कि नागरिक सरकार के प्रति।

लोकतंत्र के सिद्धांत | Principles of Democracy in Hindi

लोकतंत्र मूलभूत सिद्धांतों **(Principles of Democracy in Hindi)** के एक समूह पर आधारित है जो इसकी प्रामाणिकता और प्रभावशीलता को निर्धारित करता है। लोकतंत्र के इन **सिद्धांतों (Principles of Democracy in Hindi)** में शामिल हैं:

- **भागीदारी :** प्रत्येक नागरिक को, लिंग, नस्ल या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना, मुख्य रूप से मतदान के माध्यम से लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार है।
- **समानता :** कानून के समक्ष सभी नागरिक समान हैं और कानून के समान संरक्षण और लाभ के हकदार हैं।
- **पारदर्शिता :** एक लोकतांत्रिक सरकार की प्रक्रियाएं, निर्णय और कार्य पारदर्शी होने चाहिए, जिससे जवाबदेही सुनिश्चित हो सके।
- **जवाबदेही :** निर्वाचित प्रतिनिधि उन लोगों के प्रति जवाबदेह होते हैं जिन्होंने उन्हें चुना है।

- **एजेंडे पर नियंत्रण :** नागरिकों को अपने समाज के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक एजेंडे पर निर्णय लेने का सामूहिक अधिकार है।

लोकतंत्र के सिद्धांत | Principles of Democracy in Hindi

लोकतंत्र मूलभूत सिद्धांतों **(Principles of Democracy in Hindi)** के एक समूह पर आधारित है जो इसकी प्रामाणिकता और प्रभावशीलता को निर्धारित करता है। लोकतंत्र के इन सिद्धांतों **(Principles of Democracy in Hindi)** में शामिल हैं:

- **भागीदारी :** प्रत्येक नागरिक को, लिंग, नस्ल या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना, मुख्य रूप से मतदान के माध्यम से लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार है।
- **समानता :** कानून के समक्ष सभी नागरिक समान हैं और कानून के समान संरक्षण और लाभ के हकदार हैं।
- **पारदर्शिता :** एक लोकतांत्रिक सरकार की प्रक्रियाएं, निर्णय और कार्य पारदर्शी होने चाहिए, जिससे जवाबदेही सुनिश्चित हो सके।
- **जवाबदेही :** निर्वाचित प्रतिनिधि उन लोगों के प्रति जवाबदेह होते हैं जिन्होंने उन्हें चुना है।
- **एजेंडे पर नियंत्रण :** नागरिकों को अपने समाज के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक एजेंडे पर निर्णय लेने का सामूहिक अधिकार है।

लोकतंत्र की विभिन्न परिभाषाएँ

- **सीले के अनुसार,** ''लोकतंत्र उस सरकार को कहते हैं**,** जिसमें हर व्यक्ति भागीदार होता है।
- **डायसी के अनुसार,** ''शासन का वह रुप जिसमें शासक वर्ग संपूर्ण राष्ट्र के अपेक्षाकृत अधिकांश लोग होते है।"
- **अब्राहम लिंकन के अनुसार,** "लोकतंत्र जनता कीए जनता के लिए और जनता द्वारा सरकार है।"
- **ब्रायस के अनुसार,** "लोकतंत्र का वास्तव में मतलब संपूर्ण लोगों के शासन से अधिक या कम कुछ नहीं है**,** जो अपने वोटों के माध्यम से अपनी संप्रभु इच्छा व्यक्त करते हैं।"
- **मैकलेवर के अनुसार,** "लोकतंत्र शासन करने का एक तरीका नहीं है, चाहे बहुमत से या अन्यथा, बल्कि मुख्य रूप से यह निर्धारित करने का एक तरीका है कि कौन शासन करेगा, और मोटे तौर पर इसका अंत क्या होगा।"

- **महात्मा गांधी के अनुसार,** "लोकतंत्र का अर्थ सभी के सामान्य हित की सेवा में लोगों के सभी विभिन्न वर्गों के संपूर्ण भौतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक संसाधनों को जुटाने की विज्ञान की कला होना चाहिए।"

  और

- "लोकतंत्र की रक्षा के लिए लोगों में स्वतंत्रता, आत्म.सम्मान और अपनी एकता की गहरी भावना होनी चाहिए और उन्हें अपने प्रतिनिधियों के रूप में केवल ऐसे व्यक्तियों को चुनने पर जोर देना चाहिए जो अच्छे और सच्चे हों।"
- **जवाहर लाल नेहरू के अनुसार**, "लोकतंत्र, यदि इसका कोई मतलब है, तो इसका मतलब समानता है; न केवल वोट रखने की समानता बल्कि आर्थिक और सामाजिक समानता।"

भारतीय लोकतंत्र की विशेषताएं

भारतीय लोकतंत्र की विशेषताएं **(Features of Indian Democracy in Hindi)** भारत के विविध सामाजिक.सांस्कृतिक परिदृश्य को समायोजित करते हुए लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। **भारतीय लोकतंत्र की प्रमुख विशेषताओं (Salient features of Indian democracy in Hindi)** में शामिल हैं:

- **संघीय संरचना :** भारत एक संघीय संरचना का पालन करता है जहां शक्ति केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच विभाजित होती है।
- **सरकार का संसदीय स्वरूप :** राष्ट्रपति राज्य का प्रमुख होता है**,** जबकि प्रधान मंत्री सरकार का प्रमुख होता है।
- **सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार : 18** वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक भारतीय नागरिक को वोट देने का अधिकार है, जिससे समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित होती है।

मौलिक अधिकार : भारतीय संविधान सभी नागरिकों को छह मौलिक अधिकारों लोकतंत्र के प्रकार | Types of Democracy in Hindi

लोकतंत्र **(Democracy in Hindi)** सभी के लिए एक ही आकार की व्यवस्था नहीं है। यह किसी राष्ट्र के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक.आर्थिक संदर्भों के अनुरूप विभिन्न रूप और संरचनाएं अपनाता है। आइए लोकतंत्र के कुछ प्रमुख प्रकारों का पता लगाएं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशेषताएं और तंत्र हैं।

प्रतिनिधिक लोकतंत्र | Representative Democracy

- प्रतिनिधि लोकतंत्र **(Representative Democracy in Hidni)** में, नागरिक अपनी ओर से कानून और नीतियां बनाने के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं।
- प्रजातंत्र **(Democracy in Hindi)** का यह रूप बड़े और आबादी वाले देशों में प्रचलित है जहां सभी नागरिकों की प्रत्यक्ष भागीदारी तार्किक रूप से चुनौतीपूर्ण है।
- आमतौर पर एक विशिष्ट अवधि के लिए चुने गए प्रतिनिधियों से अपेक्षा की जाती है कि वे निर्णय लेते समय अपने मतदाताओं के हितों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करें।

संवैधानिक लोकतंत्र | Constitutional Democracy

- **संवैधानिक लोकतंत्र (Constitutional Democracy in Hindi)** एक संविधान द्वारा विनियमित लोकतांत्रिक सरकार है। यह संविधान मौलिक राजनीतिक सिद्धांतों को स्थापित करता है, और अक्सर अपने नागरिकों को बुनियादी अधिकारों की गारंटी देता है।
- संवैधानिक लोकतंत्र **(Constitutional Democracy in Hindi)** में, सरकार और उसके अधिकारियों की शक्ति कानून द्वारा सीमित होती है, और उन्हें इन कानूनों के प्रति जवाबदेह ठहराया जाता है।
- मूल विचार सत्ता के दुरुपयोग को रोकना और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है, जिससे लोकतंत्र के सिद्धांतों को बरकरार रखा जा सके।

मॉनिटरी लोकतंत्र | Monitory Democracy in Hindi

- मॉनिटरी लोकतंत्र **(Monitory Democracy in Hindi)** लोकतंत्र का एक आधुनिक रूप है जहां विभिन्न प्रकार की निगरानी संस्थाएं और एजेंसियां सत्ता के प्रयोग की निगरानी करती हैं और उसे प्रभावित करती हैं।
- मॉनिटरी लोकतंत्र **(Monitory Democracy in Hindi)** गैर.सरकारी संगठन, स्वतंत्र मीडिया, सार्वजनिक अखंडता आयोग और विभिन्न अन्य निकाय हो सकते हैं जो निर्वाचित प्रतिनिधियों के कार्यों पर नज़र रखते हैं।
- वे सार्वजनिक शक्ति के दुरुपयोग पर जवाबदेही, पारदर्शिता और नियंत्रण की एक अतिरिक्त परत प्रदान करते हैं।

इस प्रकार के लोकतंत्रों को समझकर, हम लोकतांत्रिक प्रणालियों **(Democratic Systems in Hindi)** की तरलता और अनुकूलनशीलता की सराहना कर सकते हैं। चाहे वह प्रतिनिधि लोकतंत्र हो जो लोगों की शक्ति

के साथ व्यावहारिकता को संतुलित करता है, संवैधानिक लोकतंत्र जो लोकतांत्रिक संरचना की रक्षा करता है, या मौद्रिक लोकतंत्र जो पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाता है, प्रत्येक प्रकार लोकतांत्रिक लोकाचार में विशिष्ट योगदान देता है।

लोकतंत्र के प्रकार | Types of Democracy in Hindi

लोकतंत्र **(Democracy in Hindi)** सभी के लिए एक ही आकार की व्यवस्था नहीं है। यह किसी राष्ट्र के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक.आर्थिक संदर्भों के अनुरूप विभिन्न रूप और संरचनाएं अपनाता है। आइए लोकतंत्र के कुछ प्रमुख प्रकारों का पता लगाएं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशेषताएं और तंत्र हैं।

प्रतिनिधिक लोकतंत्र | Representative Democracy

- प्रतिनिधि लोकतंत्र **(Representative Democracy in Hindi)** में, नागरिक अपनी ओर से कानून और नीतियां बनाने के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं।
- प्रजातंत्र **(Democracy in Hindi)** का यह रूप बड़े और आबादी वाले देशों में प्रचलित है जहां सभी नागरिकों की प्रत्यक्ष भागीदारी तार्किक रूप से चुनौतीपूर्ण है।
- आमतौर पर एक विशिष्ट अवधि के लिए चुने गए प्रतिनिधियों से अपेक्षा की जाती है कि वे निर्णय लेते समय अपने मतदाताओं के हितों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करें।

संवैधानिक लोकतंत्र | Constitutional Democracy

- **संवैधानिक लोकतंत्र (Constitutional Democracy in Hindi)** एक संविधान द्वारा विनियमित लोकतांत्रिक सरकार है। यह संविधान मौलिक राजनीतिक सिद्धांतों को स्थापित करता है, और अक्सर अपने नागरिकों को बुनियादी अधिकारों की गारंटी देता है।
- संवैधानिक लोकतंत्र **(Constitutional Democracy in Hindi)** में, सरकार और उसके अधिकारियों की शक्ति कानून द्वारा सीमित होती है, और उन्हें इन कानूनों के प्रति जवाबदेह ठहराया जाता है।
- मूल विचार सत्ता के दुरुपयोग को रोकना और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है, जिससे लोकतंत्र के सिद्धांतों को बरकरार रखा जा सके।

मॉनिटरी लोकतंत्र | Monitory Democracy in Hindi

- मॉनिटरी लोकतंत्र **(Monitory Democracy in Hindi)** लोकतंत्र का एक आधुनिक रूप है जहां विभिन्न प्रकार की निगरानी संस्थाएं और एजेंसियां सत्ता के प्रयोग की निगरानी करती हैं और उसे प्रभावित करती हैं।

- मॉनिटरी लोकतंत्र **(Monitory Democracy in Hindi)** गैर.सरकारी संगठन, स्वतंत्र मीडिया, सार्वजनिक अखंडता आयोग और विभिन्न अन्य निकाय हो सकते हैं जो निर्वाचित प्रतिनिधियों के कार्यों पर नज़र रखते हैं।
- वे सार्वजनिक शक्ति के दुरुपयोग पर जवाबदेही, पारदर्शिता और नियंत्रण की एक अतिरिक्त परत प्रदान करते हैं।

इस प्रकार के लोकतंत्रों को समझकर, हम लोकतांत्रिक प्रणालियों **(Democratic Systems in Hindi)** की तरलता और अनुकूलनशीलता की सराहना कर सकते हैं। चाहे वह प्रतिनिधि लोकतंत्र हो जो लोगों की शक्ति के साथ व्यावहारिकता को संतुलित करता है, संवैधानिक लोकतंत्र जो लोकतांत्रिक संरचना की रक्षा करता है, या मौद्रिक लोकतंत्र जो पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाता है, प्रत्येक प्रकार लोकतांत्रिक लोकाचार में विशिष्ट योगदान देता है।

- की गारंटी देता है, जिसमें समानता, स्वतंत्रता और संवैधानिक उपचार का अधिकार शामिल है।

  आपातकालीन अवस्था: संविधान के अनुसार, भारत में आपातकाल के समय सरकार को विशेष शक्तियों का उपयोग करने की अनुमति होती है, लेकिन इसका उपयोग उचित प्रमाण में होना चाहिए।

  स्वतंत्र मीडिया: भारत में मीडिया को स्वतंत्रता का अधिकार है, और यह सरकार और शक्तिशाली दलों की निगरानी करता है।

  संवैधानिक संरक्षण: भारत का संविधान राष्ट्र के मूल अधिकार और मूल स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत कानूनी माध्यम है, और इसे संरक्षित रखने के लिए सुप्रीम कोर्ट की भूमिका होती है।

  भूमिकात्मक और जातिवाद के खिलाफ: आधुनिक भारत में लोकतंत्र **(Democracy in India in Hindi)** का मूल मकसद भूमिकात्मक और जातिवाद के खिलाफ लड़ाई में है, और यह सामाजिक और आर्थिक समानता को बढ़ावा देने के लिए कई उपायों का अधिकारी है।